नवरात्रि, देवि को समर्पित महोत्सव

रविवार, १५ अक्टूबर—रविवार, २२ अक्टूबर, २०२३

नवरात्रि, जिसका अर्थ है 'नौ रात्रियाँ,' यह त्यौहार पूरे भारतवर्ष में सदियों से मनाया जाता है। देवी माँ भगवती, सर्वव्यापिनी शक्ति के सम्मान में नवरात्रि का यह उत्सव मनाया जाता है।

भारत में, नवरात्रि के दो मुख्य पर्व हैं। पहली है, चैत्र नवरात्रि, जो पश्चिमी गोलार्द्ध में वसन्त ऋतु में आती है। दूसरी नवरात्रि व्यापक रूप से मनाई जाती है जो शारदीय नवरात्रि या महानवरात्रि है, यह शरद ऋतु में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ होती है और दसवें दिन, दशहरे के त्यौहार के साथ समाप्त होती है। सिद्धयोग पथ पर, हम इस दूसरी नवरात्रि का उत्सव मनाते हैं।

ऐसे कई शास्त्र हैं जो देवी की महिमा का स्तुतिगान करते हैं और अहंकार व अज्ञान के प्रतीक रूपी आसुरी शक्तियों पर उनकी विजयगाथाओं का वर्णन करते हैं। ऐसा ही एक ग्रन्थ है—देवीमाहात्म्य, जो मार्कण्डेय पुराण के अन्तर्गत आता है और नवरात्रि की परम्परा को वर्णित करता है। इस कथा में देवी दुर्गा, जिनमें देवी के सभी स्वरूप समाहित हैं, असुर-समुदाय के साथ-साथ महिषासुर नामक राक्षस के साथ नौ दिन तक युद्ध करती हैं। दसवें दिन अर्थात् दशहरे के दिन देवी दुर्गा इन राक्षसों को पराजित करती हैं जो अन्धकार पर प्रकाश की, बुराई पर अच्छाई की विजय है।

नवरात्रि की प्रमुख विशेषताओं में से एक है, गरबा नृत्य जो देवी की सायंकालीन पूजा के भाग के रूप में किया जाता है। गरबे में एक दीपक के चारों ओर लोग घेरे बनाकर नृत्य करते हैं; यह दीपक देवी के प्रकाश का प्रतीक है। नृत्य करते समय वे तालबद्ध रूप से डांडिया एक-दूसरे से टकराते हैं। डांडिया, विभिन्न रंगों और रेशमी गुच्छों व अन्य सजीली वस्तुओं से सजी छोटी छड़ियाँ होती हैं।

नवरात्रि के दौरान सिद्धयोगी, देवी के तीन रूपों अर्थात् दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती के रूप में उनकी आराधना करते हैं। देवी के इन रूपों में से प्रत्येक रूप साधक को उस प्रकाश का अनुभव करने व उसे पोषित करने में सम्बल प्रदान करता है जो उसका सच्चा स्वरूप है। और त्यौहार की नौ रात्रियों व दसवें दिन तक सिद्धयोगी 'जय देवि आरती' गाकर देवी की विभिन्न अभिव्यक्तियों का सम्मान करते हैं।

चन्द्रतिथि के अनुसार मनाया जाने वाला नवरात्रि महोत्सव, वर्ष २०२३ में पश्चिमी गोलार्द्ध में १५ अक्टूबर से २२ अक्टूबर के बीच और भारत में १५ अक्टूबर से २३ अक्टूबर के बीच आएगा। [पश्चिमी गोलार्द्ध में अष्टमी व नवमी, एक ही दिन यानी २२ अक्टूबर को हैं।]

१५-१७ अक्टूबर

नवरात्रि की पहली तीन रात्रियाँ देवी दुर्गा का सम्मान करती हैं, यह देवी का वह रूप है जो अज्ञान का विलय करता है। दुर्गा को सिंह पर आरूढ और दिव्य अस्त्र-शस्त्रों को धारण किए हुए दर्शाया जाता है, उनकी मुखमुद्रा उग्र व प्रशान्त, दोनों ही है। देवी हमारे आन्तरिक शत्रुओं का नाश करती हैं और हमारे साहस को मज़बूत बनाती हैं। जब हम उनके आशीर्वादों का आवाहन करते हैं तो वे हमें अपने भय व अज्ञान पर विजय पाने में हमारी सहायता करती हैं जिससे हम आध्यात्मिक पथ पर दृढ़ बने रह सकें।

सिद्धयोग पथ पर नवरात्रि महोत्सव की प्रमुख बातों में से एक है 'कालि दुर्गे नमो नमः' के नामसंकीर्तन द्वारा देवी दुर्गा की शक्ति का आवाहन करना।

१८- २० अक्टूबर

नवरात्रि की अगली तीन रात्रियों के दौरान हम देवी श्रीलक्ष्मी का सम्मान करते हैं जो प्रचुरता, सुन्दरता व मांगल्य की देवी हैं। उन्हें प्रायः कमलपुष्प पर आसीन या खड़े हुए दर्शाया जाता है और उनकी खुली हथेली से स्वर्ण मुद्राएँ प्रवाहित हो रही होती हैं। जब हम देवी लक्ष्मी से प्रार्थना करते हैं व अपने अन्तर में उनकी कृपा का आवाहन करते हैं, वे हमें भौतिक व आध्यात्मिक दोनों तरह की समृद्धि प्रदान करती हैं, हमारी उदारता को प्रेरित करती हैं और हमारे अन्तर में व हमारे चारों ओर के संसार में प्रचुरता व सुन्दरता को पहचानने में हमारी सहायता करती हैं।

देवी लक्ष्मी के कई नाम व अनेक रूप हैं। इनमें से आठ स्वरूपों को श्रीअष्टलक्ष्मी कहा जाता है। एक तरीक़ा जिससे सिद्धयोगी देवी लक्ष्मी का आवाहन करते हैं, वह है 'श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम् स्तोत्रम्'—इस सुन्दर स्तोत्र का पाठ करना।

२१-२२ अक्टूबर

[भारत में २१-२३ अक्टूबर]

अन्तिम रात्रियों में हम देवी सरस्वती का सम्मान करते हैं जो प्रज्ञान, रचनात्मकता व कलात्मक अभिव्यक्ति की मूर्तरूप हैं। श्वेतवस्त्रों से सुशोभित व एक हाथ में वेद धारण किए हुए, वे हमारे अन्तर की

निर्मलता और ज्ञान के प्रकाश को दर्शाती हैं। उनके दूसरे हाथ में वीणा है जो अन्तरात्मा से स्फुरित होने वाली, नित्यनवीन, नित्य परिपूर्ति करने वाली, रचनात्मक प्रेरणा की प्रतीक है। देवी सरस्वती की आराधना करने से ज्ञानार्जन, उत्तम विचारों, वाक्पटुता और सत्य वाणी का विकास होता है। देवी सरस्वती संगीतज्ञों, कलाकारों, लेखकों तथा विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा हैं।

२३ अक्टूबर—दशहरा
[भारत में २४ अक्टूबर]

नवरात्रि महोत्सव का समापन दशहरे के दिन होता है जिसे विजयादशमी भी कहा जाता है यानी दसवाँ दिन, विजय का दिन। दशहरा, महिषासुर पर देवी की विजय को प्रकट करता है, यह परम प्रकाश के प्रभुत्व का प्रतीक है।

विजय दिवस के रूप में दशहरे का उल्लेख अन्य भारतीय शास्त्रों व ग्रन्थों में भी पाया जाता है। महाकाव्य रामायण के अनुसार यह वह दिन है जब भगवान श्रीराम ने दशानन राक्षस रावण को पराजित किया था।

महाभारत में, दशहरा वह दिन है जब पाण्डव, बारह वर्ष के वनवास और एक वर्ष के अज्ञातवास के बाद अपने राज्य में लौटे और विश्व में धर्म की पुनः स्थापना की। लौटने पर पाण्डवों ने अपने शस्त्र पुनः प्राप्त किए व उनकी पूजा-अर्चना की। इसलिए दशहरे के दिन, अपने व्यवसाय के साधनों व उपकरणों की पूजा व उनका सम्मान करने की परम्परा है।

दशहरे को वर्ष के साढ़े तीन सबसे शुभ दिनों में से एक माना जाता है। [भारत में, पारम्परिक रूप से एक-एक मिनट की गणना करने वाले पंचांग द्वारा शुभ दिन व रात निश्चित किए जाते हैं।] इसलिए, किसी भी परियोजना को आरम्भ करने के लिए यह दिन सर्वाधिक शुभ माना जाता है, विशेषकर ऐसी परियोजना जो ज्ञान, कला या संगीत से सम्बन्धित हो। दशहरा नूतन आरम्भों का दिन है, इस समय ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे नए उद्यमों की सफलता को सम्बल प्रदान करने के लिए स्वर्ग से विशेष प्रचुरता से स्वर्णिम आशीर्वादों की वर्षा होती है।

जय देवी! दिव्य प्रकाश की जय हो! धर्म की जय हो!

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।